Rajasthan Journal of Sociology

ISSN 2249-9334

Volume 14 October 2022

Peer Reviewed and UGC-CARE Listed Bilingual Journal of Rajasthan Sociological Association

Rajasthan Sociological Association

(Regd. No. 216/1973-74)

Website: www.rsaraj.org

Registered Office : Department of Sociology, University of Rajasthan, Jaipur.

Secretariat : Dr. Sushil Kumar Tyagi, Govt. P.G. College, Ratangarh(33022) Churu

E-mail: rajsociosktyagi@yahoo.co.in

RSA Office Bearers (2022-25)

President: Ashutosh Vyas

Vice President: Subodh Kumar

Vice President: Sumitra Sharma

Secretary: Sushil Kumar Tyagi

Joint Secretary: Seema Sharma

Treasurer: Mahesh Nawaria

Executive Members

Ashish Kumar (Banswara), Charulata Tiwari (Jhalawar), Inder Singh Rathore (Rajsamand), Lokeshwari (Jaipur), Mangilal Janwa (Udaipur), Manju Gupta (Kota), Parul Singh (Kota), Ruchika Sharma (Jaipur), Shruti Tandon (Udaipur), (Co-opted): Lalit Kumawat (Udaipur) and Shailendra Gehlot (Jodhpur).

Editorial Board

Chief Editor: Kirti Rajimwale

Editor: Paresh Dwivedi

Co-Editors: Manoj Rajguru, Shruti Tandon, Anju Beniwal

Editorial Advisory Committee

Naresh Bhargava (Udaipur), U.R. Nahar (Jodhpur), Sushma Sood (Jaipur), Madhu Nagla (New Delhi), S.P. Gupta (Jodhpur), Sanjay Lodha (Udaipur), K.N.Vyas (Jodhpur), S.L.Sharma (Jaipur), Manju Kumari(Jaipur), Manish Verma (Lucknow), B.N. Prasad (Patna), Madhav Govind (New Delhi), Aruna Bhargava (Jaipur), Ranu Jain (Mumbai), R.K. Saxena (Bikaner), H.N.Vyas (Bhilwara), Firoz Akhtar (Jaipur), L.D. Soni (Ajmer).

Rajasthan Journal of Sociology is a UGC CARE listed, Blindfold Peer Reviewed refereed Journal of Rajasthan Sociological Association. It is an annual publication, published in October every year.

All rights are reserved except for brief quotations in scholarly works, No part of journal may be produced without permission of the Rajasthan Sociological Association.

As per Constitution of the Rajasthan Sociological Association, all life members are entitled to receive a free copy of the journal.

Subscription rates: Individual **Rs. 250**, Institutional **Rs. 500**.

शरण, एम.आर.: लास्ट अमंग इक्वल्स: पॉवर, कास्ट एण्ड पोलिटिक्स इन बिहार्स विलेजेज 187
श्रुति टण्डन

महावीर कुमार जैन : जनजाति महिलाएँ : सामाजिक प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य 189
राजू सिंह

अशोक कुमार (अनुवादक): ज्यां द्रेज तथा अमर्त्य सेन : भारत और उसके विरोधाभास 192
जगराम गुर्जर

Rajasthan Sociological Association acknowledges with thanks the Indian Council of Social Science Research, New Delhi for

महावीर कुमार जैन : जनजाति महिलाएँ : सामाजिक प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य

उदयपुर: अंकुर प्रकाशन. 2017, पृष्ठ 200. 400 रू. ISBN 978.81.86064.91.7

समीक्षक : **राजू सिंह**
सहायक–आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रस्तुत पुस्तक महावीर कुमार जैन के पीएच. डी. शोध प्रबन्ध का परिष्कृत स्वरूप है। इस पुस्तक में लेखक ने जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया है। जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका बहुत उपयोगी है। जनजातीय समुदाय की जीवन संरचना तथा प्रकार्यात्मकता में महिलाओं की प्रस्थिति एवं उनके स्वास्थ्य के आयामों को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों को भी इस पुस्तक में सम्मिलित किया है। अनेक समाज वैज्ञानिकों ने सामाजशास्त्र के कई परिवर्तित आयामों का अध्ययन किया है, लेकिन किसी ने इनके स्वास्थ्य के मुद्दों को नहीं उठाया है। इसलिए इस पुस्तक में जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ्य के सभी आयामों को देखने का प्रयास किया गया है। जनजातीय समाज में स्त्री का स्थान पुरूष के समान है, उसमें किसी भी प्रकार के भेदभाव का अभाव रहा है। दोनों को समान दृष्टिकोण से देखा गया है। जनजातीय महिलाओं में वर्तमान में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आ रही है। शिक्षा के प्रति उनकी लगन में वृद्धि हो रही है।

वर्तमान में जनजाति समाज में स्त्री को अपने पति को चुनने का अधिकार है। इसी तरह विवाह–विच्छेद का अधिकार, विवाह–विच्छेद के पश्चात् जीवन निर्वाह राशि पाने का अधिकार, परिवार के सभी निर्णयों में उसकी सहभागिता भी देखने को मिलती है। वर्तमान में जनजाति समाज में महिलाओं में जागरूकता आ रही है। अन्धविश्वास, कुप्रथाओं का भी अन्त हो रहा है। भोजन, आवास, आमदनी, शिक्षा, वैवाहिक जीवन आदि में आंशिक परिवर्तन हो रहे हैं।

पुस्तक के प्रथम अध्याय में आदिवासी समाज की सामाजिक व्यवस्था एवं उनकी संस्कृति को स्पष्ट किया गया है। वर्तमान में इस समाज पर वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा विकास की नवीन प्रक्रियाओं के चलते अन्य समूहों के साथ इनके सम्पर्क से, इस समाज में दिखाई देने वाले प्रभावों की ओर संकेत इस पुस्तक में किया गया है। आदिवासी नवीन मानकों को अपना रहे हैं, जिसके फलस्वरूप उनकी सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। शहरी सम्पर्क एवं बाहरी हस्तक्षेप ने उनकी संस्कृति, सभ्यता, समाज व उनके स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। विभिन्न कालों में महिलाओं की प्रस्थिति को भी प्रदर्शित किया गया है। महिलाओं की स्वास्थ्य की दशाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। जनजाति महिलाओं के विकास की योजनाओं एवं पूर्व में इन पर किए गए अनुसंधानों को भी इसमें दर्शाया गया है।

दूसरे अध्याय में अनुसंधान प्रारूप के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र, निदर्शन प्रारूप, अनुसंधान चर, आनुभाविक मान्यताएँ एवं अध्ययन का विस्तार तथा उपकरण प्रविधियों को सम्मिलित किया गया है। इन्हीं बिन्दुओं के अन्तर्गत उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं नगरीय आदिवासी महिलाओं की प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया है। आदिवासी सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य पर अब तक किसी भी अनुसंधानकर्ता ने शोध कार्य नहीं किया है। इस दृष्टि ये यह कार्य अनुसंधानकर्ता का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत दक्षिणी राजस्थान को चुना गया जिसके तहत प्रतिदर्श चयन के लिये उदयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में बसे आदिवासी परिवारों की महिला उत्तरदाताओं के माध्यम से तथ्य संग्रहित किये गए हैं। इस अध्याय में विभिन्न परिवारों की

वरिष्ठ महिलाओं की प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पर्दा प्रथा, विवाह–विच्छेद के पश्चात् अधिकार, पैतृक सम्पत्तियों में हिस्सा, शिक्षा, नौकरी करने की स्वतन्त्रता पारिवारिक कार्यक्रमों में सहयोग आदि पर उनके अभिमत, राय, दृष्टिकोण, विचार उनकी पसन्द आदि का विश्लेषण अनुसंधानकर्ता ने विशेष रूप से स्पष्ट किया है।

तीसरे अध्याय में उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत आदिवासी परिवारों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है। उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को उनकी आयु, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, परिवार का स्वास्थ्य, व्यवसाय, वार्षिक आय आदि के आधार पर विश्लेषित किया गया है। अध्याय तीन के अन्तर्गत आदिवासी महिलाओं की प्रस्थिति, उसके शिक्षा प्राप्त करने के अवसर, व्यवसाय करने की स्वतन्त्रता, आत्मनिर्भरता, समाज का सांस्कृतिक स्तर, समानता के आधार पर निर्मित पति–पत्नी के सम्बन्ध, महिला को अपनी पसन्द का पति चुनने का अधिकार, पारिवारिक सम्पत्ति जैसे– भवन और भूमि को बेचने और खरीदने का अधिकार, विवाह–विच्छेद का अधिकार और विवाह–विच्छेद होने के पश्चात् जीवन निर्वाह राशि पाने का आधिकार इत्यादि आयामों को इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है।

पुस्तक के चतुर्थ अध्याय में बताया गया है कि आदिवासी समाज में महिला की प्रस्थिति प्रदत्त आधार पर तय होती है, और इन समाजों में सामाजिक रीति–रिवाज भिन्न–भिन्न होते हैं। आदिवासी महिलाओं में शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों की स्वतन्त्रता, आत्मनिर्भरता, समाज का सांस्कृतिक स्तर, समानता के आधार पर निर्मित पति–पत्नी के सम्बन्ध, उसको जीवन साथी चुनने का अधिकार, सम्पत्ति में अधिकार, आत्मनिर्भरता, सम्पत्ति जैसे– भवन, भूमि, विवाह–विच्छेद आदि के आधार पर महिलाओं को कई अधिकार प्राप्त हैं। इन्हें भी पुस्तक में विस्तृत रूप से दर्शाया गया है।

अध्याय पाँच के अन्तर्गत लेखक ने आदिवासी महिलाओं की स्वास्थ्य प्रस्थिति और महिलाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रस्थिति का स्वास्थ्य स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। आदिवासी सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल भी अच्छी तरह से होती है। आदिवासी समाज में स्वास्थ्य संरक्षण सम्बन्धी ज्ञान भी हस्तान्तरित होता है। आदिवासी लोग अपनी बीमारियों में चिकित्सा भी प्राकृतिक औषधियों के माध्यम से करते हैं। ये लोग प्राकृतिक औषधियों के बहुत जानकार होते हैं। ये आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का उपयोग कम ही करते हैं। आधुनिक चिकित्सकीय ज्ञान से ज्यादा परिचित नहीं होने वाले जनजाति लोगों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली स्वास्थ्यवर्धक एवं स्वास्थ्य संरक्षक दवाओं के सन्दर्भ में हम तार्किक अन्तःक्रिया के द्वारा यह भी कह सकते हैं कि उन्हें चिकित्सा पद्धतियों के मानकों के आधार पर उपयोगी दवाओं की जानकारी है। वे अपनी आर्थिक स्थिति, कुशलता और आपसी सौहार्द्र के द्वारा इस ज्ञान को सम्भालने का प्रयत्न करते हैं। अध्याय छः के अन्तर्गत लेखक ने 10 आदिवासी महिलाओं का वैयक्तिक अध्ययन भी किया है, जो शोध अध्ययन की गहनता को दर्शाता है। इसमें महिलाओं के स्वास्थ्य के विभिन्न आयाम स्पष्ट होते हैं।

अध्याय सात के अन्तर्गत लेखक ने आदिवासी महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को लिया है। उनमें नवीन चेतना का होना आवश्यक है। सरकार की विभिन्न सरकारी योजनाओं को उन तक पहुँचाने के सुसंगठित प्रयत्न करना आवश्यक है, इस पर प्रकाश डाला है। आदिवासी समाज के परम्परागत मूल्य, विश्वास और सामाजिक संरचना जिन आर्थिक व्यवहारों में संचालित हो रहे हैं, उनमें वर्तमान विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन लाकर तथा अन्य शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सुधारों को प्रतिस्थापित कर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के प्रति नये आयामों का विकास किया जा सकता है। लेखक ने आदिवासी समाज की महिलाओं के सम्पूर्ण विकास के लिए कई नवीन आयामों को सुविकसित रूप में प्रस्तुत किया है। आदिवासी महिलाओं के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को भी उन

तक पहुंचाना आवश्यक है। उनके बहुमूल्य सुझावों को लेकर कार्य करने से महिला विकास को सुचारू रूप से गति देने में सुविधा रहेगी ताकि महिलाओं का सर्वांगीण विकास हो सके। आदिवासी समाज की महिलाओं के लिए लेखक द्वारा लिखित यह पुस्तक, जो कि जनजाति महिलाएं: सामाजिक प्रस्थिति एवं स्वास्थ्य विषय के अन्तर्गत है, इस पुस्तक का शीर्षक भी सुरूचिपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होता है। लेखक का आदिवासी समाज को नवीन दिशा देने के लिए यह लेखन कार्य एक महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन का कार्य करेगा।

अतः यह पुस्तक ज्ञान के क्षेत्र में एक बहुमूल्य योगदान है। आदिवासी स्त्री प्रश्नों की विवेचना और विश्लेषण में यह पुस्तक आदिवासी स्त्री के समाजशास्त्रीय अवलोकन और लेखन की दृष्टि को अपनाती है। राजस्थान में इस दृष्टि से किया गया समाजशास्त्रीय लेखन अभी कम ही उपलब्ध है। इसलिए इस पुस्तक की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। लेखक ने महिलाओं पर लेखन की कई चुनौतियों को स्वीकार करते हुए यह महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान में आदिवासी स्त्रियों के जीवन से जुड़े कई साक्ष्यों का सुगठित खजाना प्रस्तुत करती है। यह एक प्रामाणिक प्रयास है, जिसमें कई बार यह भी प्रतीत होता है, कि लेखक ने अपनी तथ्यात्मक जानकारी में कहीं–कहीं वृहद् स्त्रीवादी निष्कर्ष खोजने के प्रयास भी किये हैं। यही कारण है कि यह पुस्तक सभी के लिए आवश्यक रूप से पठनीय है। समाजशास्त्रीय शोध में स्वास्थ्य के समाजशास्त्र की शाखा के क्षेत्र में यह एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जो आने वाले शोधार्थियों का भी मार्गदर्शन करेगी।